जय जय महाश्रमण

नारीलोक

अध्यक्षीय कार्यालय :

श्रीमती कुमुद कच्छारा

अम्हेर ज्वेलरी, ऑफिस नं. 6,
लक्ष्मी भुवन, आनन्दजी लेन,
रसिकलाल ज्वेलर्स के सामने,
एम.जी. रोड़, घाटकोपर (ई),
मुम्बई – 77

मो. : 9833237907

e-mail : kumud.abtmm@gmail.com

अंक 248 | पंजीकृत कार्यालय : 'रोहिणी', अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल, लाडनूं (राजस्थान) | फरवरी 2019

अनुशासन का पर्व अनूठा मर्यादोत्सव आया, महाकुंभ यह तेरापंथ का चिहुंदिशि हर्ष सवाया।
आर्य भिक्षु की देन निराली दी गण को मर्यादा, सबको सम अधिकार संघ में ना कम न कोई ज्यादा।
जयाचार्य की दूरदृष्टि से उत्सव हमें मिला है, महाश्रमण गुरु सन्निधि पावन अभिनव रुप खिला है।

अध्यक्षीय

लिखें शक्ति की नई ऋचाएं, अनुशासन के दीप जलाएं

जीवन का शाश्वत सच, मर्यादा है सुरक्षा कवच

प्रिय बहनों,

सादर जय जिनेन्द्र!

आज विकास, प्रगति और भौतिक सुख की चाह ने मनुष्य के जीवन को खतरे में डाल दिया है इसलिए जीवन के हर मोड़ पर सुरक्षा की अपेक्षा महसूस हो रही है। जीवन को यदि मैं अपने शब्दों में परिभाषित करने का प्रयास करती हूँ तो लगता है –

- जीवन एक समरांगण है जहाँ करणीय-अकरणीय का द्वन्द निरंतर चलता रहता है।
- जीवन एक महासागर है जिसमें सुख-दुःख के ज्वार-भाटा बार-बार आते रहते हैं।
- जीवन एक महापथ है जिसमें हर मोड़ पर आरोह-अवरोह आते रहते हैं।
- जीवन एक महाउपवन है जिसमें भौतिक प्रलोभन रूपी रंग-बिरंगी फूल खिलते रहते हैं।
- जीवन एक महाद्वीप है जिसमें अनंत संभावनाएं छिपी हुई है।
- जीवन एक महाकुंभ है जिसमें समय-समय पर विचारों का, अनुभवों का व रिश्तों का संगम होता रहता है।
- जीवन एक महादीप है जिससे अनेक टिमटिमाते दीपों को जलाया जा सकता है।
- जीवन एक कल्पवृक्ष है जिससे मनुष्य की हर मनोकामना पूर्ण की जा सकती है।
- जीवन एक दर्पण है जिसमें व्यक्ति को स्वयं को देखा व परखा जा सकता है।
- जीवन एक वाद्ययंत्र है जिसमें समस्वरता और सामंजस्य नहीं होते तो बेसुरा बन जाता है।

यों तो जीवन हर प्राणी जीता है लेकिन बेहतर जीवन उसीका है, जहाँ चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश फैला हुआ है। इस दृष्टि से मनुष्य जीवन को दुर्लभ माना गया है। मगर आज का व्यक्ति बौद्धिक अधिक हो गया है इसलिए भूल गया है कि जीवनयापन के लिए आवश्यक रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और आजीविका के साथ-साथ उसे सुख-शांति और समाधि भी चाहिए। आजकल ज्यादा पैसा और जल्दी पैसा की चाह में व्यक्ति सारी मर्यादाओं को लांघकर येन-केन-प्रकारेण आर्थिक संपदा से समृद्ध आसमान को छूने की कोशिश कर रहा है। जैसे-जेसे चाह बढ़ती जा रही है वैसे-वैसे मर्यादाओं का उल्लंघन होता जा रहा है। पुराने समय में बाहर दुःखों का पहरा होता था और भीतर में सुख गहरा होता था लेकिन आज बाहर सुखों का पहरा है और भीतर में दुःख गहरा है। इसमें दोष व्यक्ति का नहीं, बदलते परिवेश का है।

मर्यादा का महाकुंभ प्रतिवर्ष हमें याद दिलाता है कि जीवन को हर दृष्टि से सुरक्षित रखना है तो मर्यादा के कवच को पहन लो। आजकल जहाँ कहीं भी जाते हैं या तो सुरक्षा की जाँच की जाती है या फिर सुरक्षा का प्रशिक्षण दिया जाता है। हवाई जहाज से यात्रा करते हैं तो पहले सुरक्षा जाँच और फिर सुरक्षा का प्रशिक्षण। समुद्री जहाज से यात्रा करते हैं तो लाइफ जैकेट पहनाया जाता है। टू-व्हीलर पर सवारी करते हैं तो वाहन चालक को हेलमेट पहनना और फॉर व्हीलर से सवारी करते हैं तो बेल्ट लगाना अनिवार्य होता है। ऊँचाई तक जाने के लिए पेराशूट का सहारा लिया जाता है। इतना ही नहीं जब किसी महत्वपूर्ण दस्तावेज को डाक से भेजा जाता है तो उसे पूर्णतया सील पैक किया जाता है। खेतों की सुरक्षा के लिए बाड़ बनाई जाती है। आभूषण एवं रूपयों की सुरक्षा के लिए उसे बैंक या तिजोरी में रखे जाते हैं। वस्तुतः बाह्य सुख-सुविधा एवं सुरक्षा की दृष्टि से पूर्णतया इंतजाम किया जाता है लेकिन जीवन रूपी महत्वपूर्ण दस्तावेज की सुरक्षा के लिए कोई विशेष प्रयास नहीं किये जाते। संसार समुद्र को यदि पार करना है या जीवन के महासफर में मंजिल तक पहुँचना है तो जीवन के हर मोड़ पर पर मर्यादा के ब्रेक की अपेक्षा महसूस होती है। खाने की, पीने की, सोने की, जागने की, मौन रहने की, बोलने की, परिग्रह की, यातायात की, इच्छा एवं आकांक्षा की अर्थात् जीवन के हर पहलू में मर्यादा अपेक्षित है।

अध्यक्षीय

मर्यादा और अनुशासन के बिना न परिवार चल सकता है और न ही समाज और देश। यह एक शाश्वत सच है। जब-जब और जहाँ कहीं भी इस लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन हुआ, परिवार, समाज और देश को उसके गंभीर परिणाम भोगने पडे हैं। किसी ने ठीक ही कहा है -

मर्यादा मानव जीवन की सर्वोत्तम निधि है, मर्यादा सहज जीवन की सर्वोत्तम विधि है।
सदा सुरक्षित है वो जिनके पास मर्यादा कवच है, मर्यादा सत्यं-शिवम्-सुन्दरम की उपलब्धि है।

इसका जीवंत उदाहरण है तेरापंथ धर्मसंघ। संकल्प बल और सत्य की खाद से पल्लवित पुष्पित वटवृक्ष है तेरापंथ। आचार्य श्री महाप्रज्ञ के शब्दों में ''तेरापंथ के सौंदर्य और विकास का सबसे बड़ा कारण है - मर्यादा। अगर तेरापंथ धर्मसंघ मर्यादित नहीं होता, उसमें एक आचार्य का नेतृत्व नहीं होता तो तेरापंथ इतना विकास नहीं कर पाता। मर्यादा एक ऐसा कवच है जो तेरापंथ को सदा सुरक्षित बनाए रखता है।'' आचार्यश्री महाश्रमणजी के शब्दों में ''महामना आचार्य भिक्षु ने ऐसा विधान रचा, जो वरदान बन गया। उन्होंने ऐसी मर्यादाओं का निर्माण किया जो संघ की सुरक्षा प्रहरी बनी हुई है।''

आज अपेक्षा है प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन का, विचारों का और अपनी प्रवृत्ति का समग्रता से आकलन करता हुआ अनावश्यक दिखावा, आडम्बर और प्रदर्शन से बचकर संयमित और सीमित बनकर जीवन को आलोकित करें। आचार्य भिक्षु ने भगवान महावीर के सिद्धांतों को आत्मसात करने वाले साधु-साध्वियों के पांच महाव्रत रूपी मूल गुणों की सुरक्षा के लिए मर्यादा रूपी उत्तर गुणों का निर्माण किया। आचार्य तुलसी ने श्रावकों के लिए बारह व्रत रूपी मूलगुणों की सुरक्षा के लिए श्रावक निष्ठा पत्र रूपी उत्तर गुणों को निर्माण किया। बस जरूरत है उसका अक्षरशः पालन करने की। चाहे व्यक्तिगत जीवन हो या पारिवारिक, सामूहिक जीवन हो या सामाजिक, जीवन के प्रत्येक पल में मर्यादा की आवश्यकता रहती हैं। व्यक्ति अगर चाहे कि मेरे जीवन में सुख, शांति, समृद्धि, स्वस्थता, संतुलन और समरसता रहे तो जीवन के हर पहलू में मर्यादा को स्थान देना होगा। यही शाश्वत सत्य है। मर्यादा और अनुशासन का दीपक जलेगा तो जीवन का हर पल रोशन हो जायेगा।

बहनों ! परिवार के प्रत्येक सदस्य को मर्यादा का मूल्य बताते हुए उसे आचरण में लाने की बात समझाएं। प्रत्येक परिवार का अपने-अपने ढंग से मर्यादा पत्र बनाएं और कम से कम महीने में एक बार उस पर समीक्षा अवश्य करें। माना कि स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है पर आत्मानुशासन हमारे जन्म के साथ प्राप्त कर्तव्य चेतना है। निरंकुश आचरण से नहीं अपितु आत्म संयम के द्वारा ही हम सभ्यता और संस्कृति को चिरंजीवी बना सकते हैं।

अतः हम प्रयास करें -

- कामना और वासना पर लगाम देने का।
- लोभ और लालच के परिसीमन का।
- संयम और सामंजस्य के भाव को विकसित करने का।
- मनःस्थिति और परिस्थिति को आत्म शक्ति के द्वारा अनुकूल बनाने का।

यदि वास्तव में ऐसा होता है तो व्यक्ति कभी दुःखी नहीं हो सकता। कहा भी गया है कि -

जिसने चादर में सदा पांव समेटे अपने,
उसने दुनिया में कभी हाथ पसारा ही नहीं ।

वस्तुतः सहज, सरल और सरस जीवन की पृष्ठभूमि है मर्यादा और मर्यादा में ही है जीवन की सार्थकता। यही है **जीवन का शाश्वत सच, मर्यादा है सुरक्षा कवच।**

आपकी अपनी

कुमुद कच्छारा

सौम्य सुधामयी असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री के 48वें चयनदिवस

पर महिला समाज का

श्रद्धासिक्त वंदन ! अभिवंदन !!
अभिनंदन !!!

गुरु तुलसी की दिव्य दृष्टि का सारा जग है आभारी।
जिनके कुशल करों ने सिरजी मूरत कितनी मनहारी।।
कलाकार की भव्य कला यह जीवन कला सिखाती है।
मन के अंधियारे कोनों में नव आलोक बिछाती है।।
एक जुबां है, सद्गुण अनगिन कैसे हम गुणगान करें।
आधी दुनिया की हो गौरव, हम सात्विक अभिमान करे।।
चयन दिवस का पर्व सुहाना, चिहुंदिशि खुशियां छाई है।
अ.भा.ते. महिला मंडल देता खूब बधाई है।।
अभिनंदन ! वंदन ! है शत्-शत्, पावन है यह उत्सव गण में।
महक रहा दिल का हर कोना, सौरभ अद्भुत है कण-कण में।।

ऊर्जावाणी

तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य का स्थान सर्वोपरि है। आचार्य संघ को सर्वोपरि मानते हैं। वे संघहित में अपना पूरा जीवन समर्पित किए रहते हें। वे स्वयं आत्मानुशासित होकर संघ को अनुशासन में रखते हैं। वे मर्यादाओं का पालन करते हुए संघ को मर्यादित रखते हैं। जहां कहीं मर्यादा का अतिक्रमण होता है, वे पूरी तरह जागरूकता के साथ उसे रोकते हैं। तेरापंथ के प्रणेता आचार्य भिक्षु इस कला में पारंगत थे। वे इतने संयत थे, इतने आत्मानुशासित थे कि अपने संयम और अनुशासन से दूसरों को भी बहुत बडी सीख देते थे।

–आचार्य श्री तुलसी

जब समस्या आती है, तो उसका कोई समाधान खोजना होता है। आचार्य भिक्षु के सामने भी कई समस्याएं थीं। उस समय साधु-संस्था के आचार और व्यवहार में कुछ कठिनाइयां थी। शिष्यों को लेकर कुछ कठिनाइयां पैदा हुई। आपस में कलह बढ़ गया, संविभाग की बात नहीं रही, समानता की बात भी नहीं रही। ये सारी समस्याएं उनके सामने आई। उन्होंने सोचा, आज एक और नया परकोटा बनाने की जरूरत है, नई मर्यादाओं का निर्माण करने की जरूरत है। आचार्य भिक्षु ने आचार शुद्धि के लिए मर्यादाएं बनाई। मर्यादा-निर्माण के पांच प्रमुख उद्देश्य रहे – 1. संविभाग 2. समभाव 3. परस्पर सौहार्द 4. व्यवस्था 5. कलह मुक्ति।

–आचार्य श्री महाप्रज्ञ

व्यक्ति स्थायी नहीं होता। जो व्यक्ति कल था, वह आज नहीं है और जो आज है वह कल नहीं रहेगा। व्यक्ति तो आते हैं और चले जाते हैं, परन्तु संघ चिर स्थायी है। लगभग दौ सौ इक्यावन वर्षों से हमारा संघ चला आ रहा है और हम मंगल कामना करते हैं कि हमारा धर्मसंघ लम्बे काल तक चलता रहेगा। संघ का हित हो, भला हो, विकास हो, यह निष्ठा हमारे मन में रहनी चाहिए। हमारे द्वारा ऐसा कोई कार्य न हो जिससे संघ का अहित हो। संघ के प्रति हमारी निष्ठा इतनी हो कि जींएगे तो संघ में और मरेंगे तो संघ में। यह भी कहा जा सकता है कि शासन के लिए ही जीएंगे और शासन के लिए ही मरेंगे। हमारे भीतर शासन के प्रति निष्ठा की भावना पुष्ट रहनी चाहिए। पदोन्नति, सम्मान या व्यवस्था की बातों को लेकर संघ को छोड़ने का विचार सपने में भी नहीं आना चाहिए।

–आचार्य श्री महाश्रमण

आचार्य भिक्षु ने कानून शास्त्र का अध्ययन नहीं किया था। किसी प्रसिद्ध विधिवेता का सहयोग भी उन्हें नहीं मिला था। उन्होंने अपने अनुभव, चिन्तन और सूझबूझ के द्वारा एक छोटे से समुदाय के लिए जो संविधान बनाया, वह सैंकड़ों-हजारों व्यक्तियों के समूह को संगठित और सुव्यवस्थित रखने के लिए पर्याप्त है। विगत तेइस दशकों में उसकी किसी भी धारा में परिवर्तन की अपेक्षा नहीं हुई। यह संभावना की जा सकती है कि आचार्य भिक्षु की अन्तर्दृष्टि खुल गई, प्रज्ञा जाग गई, इसी कारण वे शाश्वत उपयोगिता वाले संविधान का निर्माण कर सके।

–साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा

महिला मण्डल

करणीय कार्य - फरवरी

प्रत्येक व्यक्ति सुखी व समृद्ध जीवन जीना चाहता है मगर असली सुख और समृद्धि क्या है वो नहीं जानता। महापुरुषों के कथनानुसार दुनिया में सबसे बड़ा सुखी वह होता है जिसकी चाह समाप्त हो जाती है। किन्तु चाह को समाप्त करना या चाह का समाप्त होना इतना आसान नहीं है। यदि हम शारीरिक दृष्टि से चिंतन करें तो कह सकते हैं कि ''पहला सुख निरोगी काया''... ''Health is Wealth''.... अथार्त सबसे बड़ा सुख और सबसे बड़ी संपत्ति है स्वास्थ्य। यदि हम मानसिक एवं भावनात्मक दृष्टि से चिंतन करें तो प्रश्न होता है कि कोई व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से पूर्णतया स्वस्थ है किन्तु मानसिक व भावनात्मक दृष्टि से पीड़ित है तो क्या वह स्वस्थ कहलायेगा ? नहीं ! क्योंकि **जब तक जीवन में होगी आधि-व्याधि-उपाधि तब तक नहीं होगी चित्त समाधि।** जब-जब चित्त समाधि की बात आती है तब-तब हमारे मानस पटल पर प्रायः बुजुर्गों की छवि अंकित हो जाती है। परंतु मुझे लगता है चित्त की समाधि का संबंध उम्र के साथ नहीं है। आजकल हर कोई व्यक्ति प्रसन्न चित्त रहना चाहता है, शांतिपूर्ण जीवन जीना चाहता है। इसलिए अपेक्षित है उसे प्रारंभ से ही इसका प्रशिक्षण दिया जाए। कहते हैं जब तक हम स्वभाव में होते हैं तब तक समाधि होती है और जब विभाव में चले जाते है तब असमाधि होती है और **''जब हो जाती है शांत आधि-व्याधि-उपाधि तब होती है चित्त समाधि।''**

- आधि अर्थात् मानसिक पीड़ा
- व्याधि अर्थात् शारीरिक पीड़ा
- उपाधि अर्थात् भावनात्मक पीड़ा और
- समाधि अर्थात् आनन्द

बहनों ! फरवरी माह में विश्व कैंसर दिवस का आगमन हमें स्वास्थ्य के प्रति पूर्णतया जागरूक रहने की प्रेरणा देता है, अतः इस माह We Connect के अन्तर्गत आयोजित करें

WE connect
Communicate Collaborate Create

CONNECTION WITH WELLNESS

स्वास्थ्य प्रशिक्षण एवं परीक्षण कैंप तथा चित्त समाधि शिविर का वृहद स्तर पर आयोजन करें

प्रशिक्षण के बिंदु

- अपने आप को स्वस्थ रखें।
- अपने आप को व्यस्त रखें।
- अपने आप को संतुलित रखें।

I (मैं) के बदले We (हम) को दे जीवन में स्थान

तभी होगा Illness (बीमारी) से Wellness (स्वास्थ्य) की ओर सही प्रस्थान

इस माह का संकल्प - प्रतिदिन 3 बार मंगलभावना का उच्चारण करें

* श्री संपन्नोऽहं स्याम् * ह्रीं संपन्नोऽहं स्याम् * धी संपन्नोऽहं स्याम्
* धृति संपन्नोऽहं स्याम् * शक्ति संपन्नोऽहं स्याम् * शान्ति संपन्नोऽहं स्याम्
* नन्दी संपन्नोऽहं स्याम् * तेज संपन्नोऽहं स्याम् * शुक्ल संपन्नोऽहं स्याम्

मार्च माह के करणीय कार्य

Connection with Empowered Mind

सशक्त नारियां देश की तकदीर, बदल देगी कल की तस्वीर

बहनों ! 8 मार्च 2019 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सभी शाखा मंडल अपने-अपने क्षेत्र में शिखर वार्ता का आयोजन करे जिसमें विभिन्न समस्त महिला संगठनों की शीर्षस्थ महिलाओं को आमंत्रित करें तथा परस्पर स्वस्थ चर्चा-परिचर्चा करें जिससे चिंतन-मंथन के दौरान कोई ठोस निष्पत्तिपरक समाधान उजागर हो।

शिखर वार्ता के बिंदु

- सशक्त नारी की परिभाषा।
- क्या सशक्त नारियां वास्तव में देश की तकदीर है ?
- परिवार, समाज व देश की कैसी है आज की तस्वीर ?
- कैसे बदले सशक्त नारियां कल की तस्वीर ?

विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी स्थान रखने वाली विशिष्ट महिलाओं का पैनल बनाकर श्रोताओं के साथ सवाल-जवाब करते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत करें।

विशिष्ट सम्मान ''प्रेरणा''

शिखर वार्ता के दौरान अपने-अपने क्षेत्र की एक ऐसी महिला को ''प्रेरणा'' सम्मान से सम्मानित किया जाये जिसने संघर्ष, साहस एवं आत्मविश्वास से शून्य से शिखर का सफर तय किया हो। यह सम्मान तेरापंथी महिला को दिया जाए जिससे समाज की बहिनों का आत्म विश्वास बढ़ेगा, उनकी काबिलियित सामने आयेगी और संस्था से जुड़ाव होगा। एक नामांकन पत्र के द्वारा उनकी पूर्ण जानकारी मंगवाई जाये तथा चयन समिति के माध्यम से किसी एक बहिन का चयन कर उसे ''प्रेरणा'' सम्मान से सम्मानित किया जाये। सम्मान पत्र व नामांकन पत्र का मैटर ABTMM मोबाईल App तथा वेबसाइट पर उपलब्ध होगा। सम्मानित बहिन का नाम केन्द्र में भेजें।

WE connect
Communicate Collaborate Create

आगामी माह के करणीय कार्य

अप्रैल- **Connection with Technology**
कार्यशैली बने सटीक, सीखें नई-नई तकनीक

मई- **Connection with Opportunities**
सही अवसर की करे पहचान, सफलता की राह बने आसान

जून- **Connection with Next Generation**
सीख लें अगर रिश्तों की ABCD, खुशहाल रहेगी नई पीढ़ी

जुलाई- **Connection with Holistic Approach**
नया चिंतन नयी सोच, जीवन में अपनाएं Holistic Approach

जुलाई माह में ''महाप्रज्ञ प्रबोध'' पर प्रश्नमंच का आयोजन करें।

जो शाखा मंडल अधिवेशन में सहभागी नहीं हुए वो अपने बकाया रजिस्ट्रेशन शुल्क की राशि अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के खाते (ओबीसी लाडनूं एकाउन्ट नं. 10272010000350) में 31 मार्च तक जमा करावें। रसीद की प्रतिलिपि केन्द्रीय कार्यालय लाडनूं में भिजवाएं।

करणीय कार्य - फरवरी

बेटियों के बढ़ते कदम - फहराएं विकास के परचम

प्यारी बेटियों

सादर जय जिनेन्द्र !

हम सभी सौभाग्यशाली है तेरापंथ संघ पाकर। जिसके विकास का आधार है मर्यादा और अनुशासन। संघ में ऐसी कई घटनाऐं है चाहें थोड़े से वस्त्र की बात हो या पानी की, हमें अनुशासन का महत्व बताती है। परन्तु आज का चित्र कुछ और है। आज कई कन्याऐं अभिभावक के छोटे से उपालंभ से आत्महत्या की ओर कदम बढ़ाती है, ससुराल की दहलीज पर कदम रखते है वहाँ की रीत बंधन लगने लगती है और अपना अलग घर बसाने का प्रयास शुरु हो जाता है। बस स्वतंत्रता मुख्य है और अनुशासन गौण हो गया। एक पतंग भी ऊँचे आकाश में तब उड़ सकती है जब डोर हाथ में रहे।

प्यारी बेटियों अगर आप को सोना बनकर चमकना है तो अनुशासन रूपी तप को सहन करना होगा। तो आइये हम संघ के मर्यादा महत्व को हमारे जीवन में उतार कर उसे व्यावहारिक रूप देते हैं।

इस माह आपको कार्यशाला आयोजित करनी है जिसका विषय है

"Discipline is the key of Success"

(अनुशासन में आस्था, जीवन विकास का रास्ता)

आपको विशेषज्ञ को बुलाकर निम्न बिन्दु पर चर्चा करनी है

- आचार्य भिक्षु का अनुशासन (घटनाऐं जाने)
- Dicipline in day to day life - achieve your goal
- Self discipline is self love.

The Uniqueshala

Step up..... Dive with facebook live

कार्यक्रम के अन्तर्गत फरवरी माह में 3 तारीख को दोपहर 1 बजे हम सभी रूबरू होंगे जिसका विषय होगा –

For beauty health is secret key
Lets learn to be disease free

Cancer awareness and general health and fitness पर प्रशिक्षण होगा।

महातपस्वी परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में अभातेममं के तत्वावधान में वर्ष 2019 के बैंगलुरु चातुर्मास में आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रम

- दिनांक 5, 6, 7 अगस्त 2019 (सोमवार, मंगलवार, बुधवार)
  15 वाँ राष्ट्रीय कन्या अधिवेशन
- दिनांक 8, 9 अगस्त 2019 (गुरुवार, शुक्रवार)
  तत्त्वज्ञान/तेरापंथ दर्शन प्रचेता दीक्षांत समारोह
- दिनांक 16, 17, 18 सितम्बर 2019 (सोमवार, मंगलवार, बुधवार)
  44 वाँ राष्ट्रीय महिला अधिवेशन

तत्त्वज्ञान/तेरापंथ दर्शन दीक्षांत समारोह

वर्ष 2019 का शुभागमन एक खुशखबर लेकर आया है। एक चिर प्रतीक्षा का मानो समापन होने जा रहा है। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वाधान में आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत 8 एवं 9 अगस्त 2019 को बैंगलुरू में परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर के सान्निध्य में तत्त्व प्रचेता/तेरापंथ प्रचेता का दीक्षांत समारोह आयोजित किया जा रहा है। जिसमें वर्ष 2013 से लेकर वर्ष 2018 तक के सभी प्रचेताओं को डिग्री प्रदान की जायेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ जी ने कहा है कि ''जैसे-जैसे व्यक्ति स्वाध्याय करता है वैसे-वैसे उसका आनन्द बढ़ता जाता है। एक प्रश्न उपस्थित होता है आनन्द कहां से आया? मनुष्य की सामान्य प्रकृति है कि कोई मनचाही वस्तु मिली आनन्द होता है। स्वाध्याय करने वाले को कोई वस्तु तो मिली नहीं फिर आनन्द कहां से आया ? आनन्द का स्त्रोत वस्तु नहीं किन्तु वस्तु के साथ जुड़ी हुई सच्चाई है, ज्ञान है। हीरे का मूल्य जानने वाले को हीरा मिलने पर जो आनन्द आता है वह आनन्द उसे नहीं आता जो इसके मूल्य को नहीं जानता।''

ज्ञान पिपासुओं के आनन्द-मेले का ही आयोजन किया जा रहा है। तत्त्वज्ञान प्रचेताओं का भव्य समागम जहां स्वाध्याय और ज्ञान-साधना का स्वर मुखर होगा जिसके विशेष आकर्षण होंगे :-

- दीक्षांत समारोह
- प्रतियोगिताएं
- नए कोर्स का शुभारंभ
- पुरस्कार प्रोत्साहन
- आवास व्यवस्था 8 अगस्त को प्रातः 11 बजे से उपलब्ध करवायी जायेगी।
- 8 अगस्त को दोपहर 2 बजे परिचय सत्र व सायं 5 बजे रिहर्सल रखी गयी है।
- 9 अगस्त को प्रातः दीक्षांत समारोह एवं दोपहर में एक विशेष प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा।
- 9 अगस्त सायं 4 बजे तक कार्यशाला चलेगी। वापसी का कार्यक्रम उसके अनुरुप बनायें।
- तत्त्वज्ञान पाठयक्रम के छः वर्ष के कंठस्थ कोर्स (थोकड़ों) को याद करके आयें।
- गणवेश भी साथ में लाएं। बहनें महिला मंडल का गणवेश तथा भाई सफेद ड्रेस अवश्य लाएं।

अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी हेतु सम्पर्क करें :-

श्रीमती पुष्पा बैंगानी
निदेशिका (आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना)
+91 9311250290

श्रीमती मंजु भूतोड़िया
राष्ट्रीय संयोजिका
+91 93121 73434

- साधना का मजबूत चरण - श्रावक प्रतिक्रमण के अंतर्गत दिनांक 21 मार्च 2019 गुरुवार को होली चातुर्मासिक पक्खी का प्रतिक्रमण अधिक से अधिक भाई-बहन करें। यथासम्भव सामूहिक प्रतिक्रमण करने का प्रयास करें।
- रास्ते की सेवा - सभी शाखा मंडलों से विशेष निवेदन है कि अपने-अपने क्षेत्र के आस-पास पधारे विहारगामी साधु-साध्वियों की रास्ते की सेवा में अवश्य संभागी बने। हम श्रावक है, श्रावकत्व का परिचय दें। चारित्रात्माओं की सेवा कर निर्जरा के भागी बनें तथा संघनिष्ठा का परिचय दें।
- जैन स्कोलर योजना - तृतीय बैच की प्रथम दस दिवसीय कार्यशाला दिनांक 24 मार्च 2019 (रविवार) से 4 अप्रैल 2019 (गुरुवार) तक जैन विश्व भारती, लाडनूं में आयोजित होगी। सभी संभागीगण अपने आगमन व प्रस्थान की जानकारी संयोजिका श्रीमती पुष्पा बैद - 09314194215 को प्रेषित करें।

मुंबई कन्या मंडल का भव्य आयोजन

Just 3 Days - A Lesson for Life

मुंबई – अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की सक्रिय शाखा तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई ने कन्याओं के लिए संस्कार निर्माण के त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन रोचक रूप में रियलिटी शो की थीम पर किया। ''**Just 3 Days Lesson for Life Time**'' नामक इस विशेष रियलिटी शो के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर अ.भा.ते.म.मं. अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने शिरकत की। राष्ट्रीय कन्यामंडल सह प्रभारी श्रीमती तरूणा बोहरा, रा.का.स. एवं मुंबई महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती जयश्री बडाला, रा.का.स. श्रीमती भाग्यश्री कच्छारा, मुंबई सभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्रजी तातेड़, मंत्री श्री विजयजी पटवारी, श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रजी कोठारी, मुबई महिला मंडल मंत्री श्रीमती श्वेता सुराणा आदि पदाधिकारियों की उपस्थिति में 50 कन्याओं के कुमकुम पगलिया लेकर उनका तीन दिन के शिविर के लिए गृहप्रवेश करवाया गया। मुंबई कन्या मंडल प्रभारी श्रीमती मीना कच्छारा ने आगंतुक अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया त्रिदिवसीय शिविर का मुख्य उद्देश्य सामंजस्य, सहनशीलता, सहयोग, प्रेम आदि गुणों का विकास कर पारिवारिक जीवन में किस तरह से शांतिपूर्वक जिया जा सकता है इसका विशेष तौर पर कन्याओं को प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा। मुंबई कन्यामंडल संयोजिका सुश्री मानसी बागरेचा, सह संयोजिका सुश्री ध्रुवी मादरेचा एवं दिपांशी धोका ने कन्याओं को J3D के नियम समझाये। जिसके अंतर्गत कन्याओं को तीन दिन तक बिना मोबाईल फोन के खाना बनाने से लेकर रोजमर्रा के प्रत्येक कार्य स्वयं करने थे एवं 10-10 के पांच ग्रुप बनाकर प्रत्येक ग्रुप को एक परिवार बनाया गया। उन्हें पाँच विला में रखा गया। शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, आध्यात्मिक एवं रचनात्मक भावों का विकास करने हेतु भिन्न-भिन्न प्रकार के टास्क दिये गये।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने मुंबई कन्या मंडल को इस रोचक व शिक्षाप्रद आयोजन के लिए बधाई दी साथ ही सहभागी कन्याओं को कुमकुम पगलिया की गरिमा समझाते हुए कहा कि उसकी पवित्रता एवं विशेषताओं को हम जीवन में संजोकर जीवन में एक आदर्श स्थापित कर सकते हैं। त्रिदिवसीय इस आयोजन में विभिन्न प्रशिक्षणों के साथ-साथ ग्रुप डिस्कशन एवं अनेक प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया।

J3D के समापन सत्र एवं ग्रांड फिनाले में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा, ट्रस्टी श्रीमती प्रकाश देवी तातेड़, राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी श्रीमती मधु देरासरिया एवं सह प्रभारी तरूणा बोहरा विशेष तौर पर उपस्थित हुई। त्रिदिवसीय कार्यक्रम की झलकियां विडियो पर दिखाई गयी। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बधाई देते हुए कहा कि आगाज से भी अधिक सुंदर अंजाम है। श्रीमती मधु देरासरिया ने मुंबई कन्या मंडल की सराहना करते हुए आयोजन के लिए बधाई दी। अलग-अलग सत्रों का संचालन क्रमशः श्रीमती पिंकी सांखला, सुश्री मानसी बागरेचा, श्रीमती जूली मेहता, श्रीमती ज्योति डांगी, श्रीमती पूनम परमार व सुश्री गुंजन लोढ़ा ने किया। समापन सत्र में मिसेज एशिया पिंकी राजगिरिया कांदीवली सभा अध्यक्ष श्री जंवरीमलजी नौलखा, जीवन विज्ञान अकादमी से श्री प्रीतमजी हिरण, श्री दलपतजी बाबेल, श्री अशोकजी कोठारी, श्राविका गौरव श्रीमती सुशीला कच्छारा, श्री दिलीपजी चपलोत, श्री मनोजजी लोढ़ा एवं मेवाड़ कन्या मंडल की विशेष तौर पर उपस्थिति रही। इस वृहद आयोजन में पूर्वाध्यक्ष श्रीमती भारती सेठिया, उपाध्यक्ष श्रीमती रचना हिरण, सहमंत्री श्रीमती गीतांजली बोथरा, श्रीमती सुशीला मादरेचा, श्रीमती गोमती मेहता आदि का सहयोग रहा। कन्या मंडल से रिया चोरड़िया, दिव्या भंडारी, सेजल नाहर, हीनल बाफना, भारती धोका, शिखा मेहता, शिखा बाफना, किंजल मेहता, दिशा सियाल एवं सुरभि डूंगरवाल का विशेष श्रम रहा। कार्यक्रम में विजेता कन्याओं एवं ग्रुप को सम्मानित किया गया। आभार ज्ञापन कन्या मंडल सह प्रभारी श्रीमती प्रीति बोथरा ने किया।

आचार्य महाश्रमण कन्या सुरक्षा सर्किल का लोकार्पण

पाली – अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की महत्वपूर्ण योजना कन्या सुरक्षा योजना के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल पाली द्वारा नेहरू उद्यान में आचार्य महाश्रमण कन्या सुरक्षा स्तम्भ का भव्य लोकार्पण समारोह अ.भा.ते.म.मं. अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा की अध्यक्षता में किया गया। कार्यक्रम में सभापति श्री महेन्द्रजी बोहरा, डीआईजी श्री विशालजी दवे, पार्षद श्री सुरेशजी, रोडवेज डिपो चीफ श्री अशोकजी, मैनेजर स्वाति मेहता, राष्ट्रीय ट्रस्टी श्रीमती प्रियंका जैन, जोधुपर से श्रीमती सरिता कांकरिया आदि ने शिरकत की। तेरापंथ भवन से नेहरू उद्यान तक विशाल रैली के रूप में कन्याओं और महिलाओं ने कन्या सुरक्षा के संदेश देते हुए उद्घोष लगाये। प्रेरणा गीत से प्रारंभ हुए कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा पाली महिला मंडल ने स्तम्भ बनवाकर सरप्राइज दिया है। मंडल इसी प्रकार जोश व सक्रियता से कार्य करते हुए देश, संघ व संस्था के विकास में अपना योगदान देता रहे। सभापति महोदय ने कहा कि सार्वजनिक स्थल पर निर्मित यह स्तंभ निश्चित तौर पर कन्या सुरक्षा के संदेश से जनमानस को प्रेरित करेगा। जैन संस्कार विधि द्वारा हुए लोकार्पण के इस कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष श्री सज्जनजी, मंत्री श्री प्रकाशजी, तेयुप अध्यक्ष श्री पंकजजी, मंत्री श्री पीयूषजी आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही। मंडल अध्यक्ष श्रीमती रेखा बरड़िया ने सभी का भावभीना स्वागत किया। बहनों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। मंत्री श्रीमती उषा मरलेचा ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया। सहमंत्री श्रीमती विनिता बैंगानी ने कार्यक्रम का सुंदर संचालन किया। महिला मंडल, कन्या मंडल व ज्ञानशाला के बच्चों की अच्छी उपस्थिति रही।

बरपेटा रोड – अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल बरपेटा रोड ने बरपेटा रोड़ पुलिस थाने के पास कन्या सुरक्षा स्तंभ का निर्माण किया। स्तंभ के लोकार्पण समारोह से पूर्व तेरापंथ भवन में महामंत्र का जाप कर भवन से स्थल तक रैली निकाली गयी। मुख्य अतिथि डी.सी. थानेश्वर मालाकारजी एवं टाउन कमेटी चेयरमेन श्रीमती सरिता देवनाथ ने जैन संस्कार विधि द्वारा पूजन के पश्चात् स्तम्भ का लोकार्पण किया। रा.का.स. श्रीमती मधु डागा एवं श्रीमती रंजु खटेड़ ने संस्था द्वारा संचालित गतिविधियों एवं देशभर में कन्या सुरक्षा एवं स्वस्थ एवं स्वच्छ भारत के निर्माण हेतु किये गये कार्यों की जानकारी दी गयी। इस अवसर पर टाउन कमेटी वाइस चेयरमेन श्री फूलेनदासजी व स्थानीय बीजेपी सेकेट्री श्री बबलू देवरी जी की गरिमामयी उपस्थिति रही। उपस्थित विशिष्ट अतिथियों के समक्ष महिला मंडल द्वारा शौचालय बनवाने हेतु भूमि उपलब्ध करवाने एवं स्तम्भ के मार्ग का नाम भी कन्या सुरक्षा मार्ग रखने हेतु प्रस्ताव रखा गया। मंत्री श्रीमती मधु सेठिया ने सभी का स्वागत किया। मंडल अध्यक्ष श्रीमती शशिदेवी बोथरा ने आभार ज्ञापन किया। अध्यक्ष श्री रिद्धकरणजी बोथरा, श्रीमती अनोप देवी, स्व. मानकचंदजी बोथरा एवं सभा का स्तम्भ निर्माण में विशेष सहयोग रहा। सभा उपाध्यक्ष श्री सुबाहुजी डागा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष श्री अनिलजी बैंगानी ने कन्या सुरक्षा पर अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में बरपेटा रोड़ की लगभग सभी संस्थायें एवं प्रेस क्लब की भी उपस्थिति रही। सभी ने मंडल के इस कार्य की सराहना करते हुए बधाई प्रेषित की। संचालन श्रीमती सायर बोथरा द्वारा किया गया।

कडलूर में अभातेममं के नववर्ष कैलेंडर का विमोचन

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में कडलूर में अखिल भारतीय महिला मंडल के नव वर्ष कैलेंडर का विमोचन किया गया। महामंत्री श्रीमती नीलम सेठिया के साथ राष्ट्रीय कार्य समिति सदस्य श्रीमती उषाजी बोहरा, शशिजी नाहर, सुनीताजी बोहरा एवम मंजुलाजी डूंगरवाल की गरिमामय उपस्थित रही। टेबल कैलेंडर एवम calender at a glance cutout श्री चरणों में समर्पित किया गया। गुरु चरणों से नव वर्ष का हुआ आगाज़, जो हमे वर्ष भर नवस्फुर्ती एवम नव स्फुरणा देता रहेगा।

विभिन्न कार्यक्रमों में राष्ट्रीय अध्यक्ष की उपस्थिति

जोधपुर – अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की जागरूक शाखा तेरापंथ महिला मंडल जोधपुर ने शासनश्री साध्वी चांद कुमारीजी एवं शासनश्री साध्वी कमलप्रभाजी के सान्निध्य व प्रेरणा से तेरापंथ भवन, अमर नगर में अ.भा.ते.म.मं. अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा द्वारा मंडल के कार्यालय का उद्घाटन करवाया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने शुभकामना प्रेषित करते हुए कहा कि संघ व संघपति के प्रति समर्पित रहते हुए मंडल पूज्यवरों के इंगितानुसार कार्य करे एवं कार्यालय उसमें योगभूत बने। उन्होंने रजिस्टर पर स्वस्तिक की रचना कर मंगलभावना लिखी व मंडल के प्रति मंगलभावना व्यक्त की। राष्ट्रीय ट्रस्टी प्रियंका जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैद एवं रा.का.स. श्रीमती तरूणा बोहरा, श्रीमती भाग्यश्री कच्छारा तथा श्रीमती अदिती सेखानी की इस अवसर पर गरिमामयी उपस्थिति रही। इस मंगल अवसर पर प्रेरणागीत, जय जय महाश्रमण एवं ओम अर्हम् की ध्वनि से ऑफिस गुंजायमान हुआ। इस अवसर पर जोधपुर महिला मंडल ने राष्ट्रीय अध्यक्ष के 51वें वर्ष के प्रवेश के उपलक्ष में भावना चौके हेतु 51,000 की राशि संस्था को भेंट की। स्थानीय अध्यक्ष श्रीमती कविता सुराणा ने सभी का स्वागत करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष से कहा कि आपका आगमन मंडल में एक नये जोश व उर्ज्जा का संचार कर रहा है।

उद्घाटन समारोह के पश्चात् जोधपुर में निर्मित तीनों कन्या सुरक्षा सर्किल पर गणतंत्र दिवस के सुअवसर पर राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। जन-गण-मन... गीत द्वारा देश को सलामी दे कन्या सुरक्षा के संकल्पों को गुंजायमान किया गया। संपूर्ण कार्यक्रम बड़े ही हर्षोल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में स्थानीय मंत्री श्रीमती मोनिका चौरड़िया, संरक्षिका श्रीमती आशा सिंघवी, श्रीमती सरिता कांकरिया, श्रीमती ज्योति जैन श्रीमती अर्चना बुरड़, श्री उम्मेदमलसा सिंघवी व मंडल की बहनों के साथ-साथ सभा व युवक परिषद् के सदस्यों की विशेष उपस्थिति रही। जोधुपर में महामंत्री श्रीमती नीलम सेठिया की सुपुत्री के विवाह में शरीक हुई राष्ट्रीय टीम के साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने शासनश्री साध्वी कमलप्रभाजी आदि ठाणा-5 के दर्शन सेवा का लाभ लिया और पाथेय प्राप्त किया।

मुंबई – संपूर्ण जैन समाज की संस्था भारत जैन महामंडल की महिला शाखा द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम ''युगान्तर'' का भव्य आयोजन बिड़ला मातोश्री सभागार में किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा, राष्ट्रीय परामर्शक श्रीमती प्रेमलता सिसोदिया एवं रा.का.स. श्रीमती सुमन बच्छावत जिन्होंने पूर्व में इस संस्था का नेतृत्व किया था उनका सम्मान किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर श्रीमती शोभा धारीवाल, फिल्म अभिनेत्री रति अग्निहोत्री, श्रीमती चंदा रूणवाल, डॉ. हंसाबेन आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। भारत जैन महामंडल के अध्यक्ष श्री के.सी. जैन की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में महिला विभाग अध्यक्ष श्रीमती गीता जैन व मंत्री श्रीमती सीमा गंगवाल ने सभी का स्वागत व अभिनंदन किया। इस अवसर पर भारत जैन महामंडल के पूर्व अध्यक्ष एवं युवा शाखा अध्यक्ष श्री बी.सी. भलावत आदि विशिष्ट व्यक्तियों की विशेष उपस्थिति रही।

मुंबई – मेवाड़ महिला मंडल, मुंबई के रजत जयंती समारोह पर षण्मुखानंद ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम ''रजत स्पंदन'' में अ.भा.ते.म.मं. अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा विशेष अतिथि के तौर पर उपस्थित रही। मेवाड़ महिला मंडल के इस विशेष अवसर पर उन्होंने अध्यक्ष श्रीमती राजकुमारी बोहरा व सभी पूर्वाध्यक्षों के साथ-साथ पूरी टीम को बधाई प्रेषित की। कार्यक्रम में रा.का.स. श्रीमती जयश्री बडाला व श्रीमती भाग्यश्री कच्छारा ने भी सहभागिता दर्ज की।

संगठन यात्रा ''उन्नति''

पाली – अ.भा.ते.म.मं. द्वारा ''उन्नति'' संगठन यात्रा के अंतर्गत राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने राष्ट्रीय ट्रस्टी श्रीमती प्रियंका जैन के साथ पाली महिला मंडल की संगठन यात्रा की। मंडल अध्यक्ष श्रीमती रेखा बरडिया, मंत्री श्रीमती उषा मरलेचा व केसरिया परिधान में सुसज्जित युवती बहनों ने राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं ट्रस्टी का कुंकुम तिलक अदि से भावभीना स्वागत किया। प्रेरणा गीत से संगोष्ठी का प्रारंभ किया गया। संगोष्ठी में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने ''मन की बात – आपके साथ'' में बहनों की जिज्ञासाओं का बहुत ही सरल व सटीक तरीके से समाधान कर सभी में नई ऊर्जा का संचार किया। जोधपुर महिला मंडल से श्रीमती सरिता कांकरिया का यात्रा में विशेष सहयोग रहा। पाली महिला मंडल की बहनों की अच्छी संख्या में उपस्थिति ने संगठन यात्रा को सफल व सार्थक बनाया।

इचलकरंजी – आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या शासनश्री साध्वी जिनरेखाजी आदि ठाणा – 5 के सान्निध्य में अ.भा.ते.म.मं. के महाराष्ट्र प्रभारी श्रीमती निर्मला चंडालिया एवं श्रीमती जयश्री जोगड़ ने ''उन्नति'' संगठन यात्रा के तहत इचलकरंजी क्षेत्र की सार संभाल की। साथ ही कार्यक्रम में ''बढ़ाये हाथ-पाये साथ'' कार्यशाला भी आयोजित की गयी। प्रेरणागीत के मंगल संगान से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। अध्यक्ष श्रीमती रानी देवी छाजेड़ ने स्वागतोद्गार व्यक्त किये। श्रीमती सुनिता गिडिया ने साध्वी प्रमुखाश्री एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा के संदेश का वाचन किया। शाखा सार संभाल प्रश्नावली द्वारा संविधान, रजिस्टर एवं योजनाओं की जानकारी बहनों को दी गयी। साध्वीश्री जिनरेखाजी द्वारा कार्यशाला के अंतर्गत बहनों को सहनशीलता, सामंजस्य, व्यवहारकुशलता, अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में संतुलन के साथ ही जीवन में भगवान महावीर के सिद्धांत अनेकांतवाद को अपनाने की प्रेरणा दी गयी। साध्वीश्री मधुरयशाजी ने सभी को साथ लेकर चलने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में जयसिंगपुर अध्यक्ष श्रीमती तारामणि बरड़िया, स्थानीय सभा मंत्री श्री पुष्पराज संकलेचा ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र छाजेड़, मंत्री श्री संतोष भंसाली एवं जयसिंगपुर, माधवनगर क्षेत्र के साथ इचलकरंजी की बहनों की गरिमामयी उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन मंत्री श्रीमती सपना बालड़ ने किया।

कविता प्रतियोगिता

बहनों ! प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की जन्म शताब्दी का स्वर्णिम अवसर हमारे सामने है। हम सौभाग्यशाली है कि आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की समृद्ध साहित्य संपदा तेरापंथ धर्मसंघ में उपलब्ध है। उन साहित्य के शीर्षक पर कविता प्रतियोगिता का आयोजन करे। कविता लिखित में मंगवाये।

उदाहरण – ''किसने कहा मन चंचल है'' इसको कविता का शीर्षक बनाएं और उस पर अपने मौलिक भाव लिखें या फिर इस पुस्तक को पढ़कर उसका भावार्थ कविता में दर्शाएं।

- शाखा मंडल अपने-अपने क्षेत्र में कविता प्रतियोगिता का आयोजन करे तथा चयनित सर्वश्रेष्ठ प्रथम, द्वितीय, तृतीय कविता को अध्यक्षीय कार्यालय में **28 फरवरी** तक भेजे।
- कविता स्वरचित व मौलिक हो।
- कम से कम 15 व अधिकतम 20 लाइन में हो।
- कविता फुल स्केप साइज के पेपर पर सुंदर अक्षरों में लिखी हो या टाइप की हुई हो। साथ में रचनाकार का नाम, फोन नं. व क्षेत्र का नाम लिखा हुआ हो।
- शाखा मंडल के अध्यक्ष या मंत्री के माध्यम से ही कविता भेजे। व्यक्तिगत कोई नहीं भेजे।
- राष्ट्रीय पदाधिकारी एवं कार्यसमिति सदस्य भी इसमें भाग ले सकते हैं।
- कौन-से शाखा मंडल को किस पुस्तक पर कविता लिखनी है उसकी जानकारी वाट्सअप के माध्यम से प्रेषित कर दी गई है। यदि वो पुस्तक शाखा मंडल के पास उपलब्ध नहीं है तो जो पुस्तक उपलब्ध हो उसके आधार पर भी रचना भेज सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए अपने-अपने क्षेत्र की प्रभारी बहनों से संपर्क करें।
- समस्त रचनाओं में से सर्वश्रेष्ठ 100 कविताओं का चयन करके पुस्तक में प्रकाशित किया जायेगा।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता फरवरी 2019

सन्दर्भ ग्रंथ : महाप्रज्ञ प्रबोध – 46 से 60 पद्य अर्थ सहित
तेरापंथ का इतिहास पृष्ठ 311 से 328 तक

अ. सही उत्तर लिखें

1. मुनि जीतमलजी का नाम युवाचार्य के रूप में कहाँ घोषित किया गया ?
   (क) उदयपुर (ख) पाली (ग) जोधपुर (घ) नाथद्वारा
2. विश्रुत का क्या अर्थ है ?
   (क) सहज (ख) ज्ञान सागर (ग) प्रसिद्ध (घ) तेजस्वी
3. ऋषिराय ने आचार्य श्री भारमलजी के साथ कितने चातुर्मास किए ?
   (क) 3 (ख) 18 (ग) 30 (घ) 17
4. प्रथम मालव यात्रा के समय ऋषिराय की अवस्था कितनी थी ?
   (क) 38 (ख) 36 (ग) 37 (घ) 35
5. आचार्य श्री रायचंदजी ने सर्वाधिक चातुर्मास कहाँ किए ?
   (क) जयपुर (ख) पाली (ग) नाथद्वारा (घ) उदयपुर

ब. किसने किससे कहा ?

1. मेरे जीवन की चिर अभिलाषा है कि मैं भगवान महावीर की मूल भाषा – प्राकृत में प्रवचन सुनूं।
2. इस बार मैं बुलाऊं तो भी मत आना, यह मेरी आज्ञा है।
3. व्यवहार में कहा जाता है कि सत्य की सदा विजय होती है।
4. इन समाधानों के मूल में है मुनिश्री नथमलजी।
5. आहार पानी का परित्याग कर परिष्ठापन कर दिया जाता।

स. वाक्य सही करके लिखें :

1. तत्काल अत्यन्त उग्र के फल इसी जन्म में पुण्य और मिल जाते हैं पाप।
2. सत्यता का आत्म साक्षी से कितना बड़ा महत्व धर्माराधना होता है।
3. जानता आत्मा को मानता नहीं हूँ मैं।

द. इन प्रश्नों के उत्तर दें :

1. देवलोक गमन से पूर्व ऋषिराय के अंतिम शब्द क्या थे ?
2. ऋषिराय ने कालकी शब्द किसके लिए प्रयुक्त किया व कालकी विशेषण क्यों दिया ?
3. मुनि नथमल ने संस्कृत में भाषण देने का अभ्यास कहां प्रारम्भ किया ?
4. मैं तो मुनि नथमलजी का शिष्य हूँ वे मेरे गुरु हैं – यह किसने कहा उनका परिचय दीजिए।
5. ऋषिराय की यात्राओं में (विहार में) प्रकृति किस प्रकार सहायता करती थी।

नोट : उत्तर पुस्तिका पर अपना नाम पता एवं फोन नं. अवश्य लिखें।
उत्तर महिने की 25 तारीख तक श्रीमती रमन पटावरी के पते पर अवश्य पहुँच जाए।
उत्तर फुल साइज पेज पर हाशिया छोड़ते हुए शुद्ध एवं साफ लिखें।
प्रश्न का उत्तर जितना पूछा जाए उतना ही दें।

श्रीमती रमन पटावरी
SILVER SPRING,
JBS 5 HALDEN AVENUE,
BLOCK - 1, 17-C, KOLKATA - 700105
मोबाईल : 9903518222 / 033-40620395
ई-मेल : raman.patawari@gmail.com

महाप्रज्ञ प्रबोध

जनवरी माह के प्रश्नों के उत्तर

अ.

सोपान – 1 साध्वी प्रमुखा झमकूजी
सोपान – 2 हेम शब्दानुशासन
सोपान – 3 मुनि छत्रमलजी
सोपान – 4 संयमानुष्ठान
सोपान – 5 मुनि हीरजी
सोपान – 6 खेतसीजी
सोपान – 7 नवमी
सोपान – 8 पाली
सोपान – 9 हाँ

ब.

1. प्रमाणनयतत्व लोकालंकार।
2. आवश्यक, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन और वृहत्कल्प।
3. छाछ को गरम करने के बाद उस पर जो नीले रंग का पानी निथर आता है उसे आछ कहते हैं।
4. प्रतिदिन प्रतिक्रमण के समय दैनिक कार्यों तथा समिति, गुप्तियों में छद्मस्थता वश हो जाने वाली भूलों की आलोयणा होती है।
5. मुनि खेतसी जी ने आमेट के एक भाई से कहा।

दिसम्बर माह की प्रश्नोत्तरी के 10 भाग्यशाली विजेता

1. ललित कुमार बरमेचा, लुधियाना
2. शांति बांठिया, साऊथ कोलकाता
3. विमला गोलेछा, बालोतरा
4 भारती वेदमूथा, हुबली
5. चंदा बोथरा, उत्तर हावड़ा
6. सीमा बैद, किशनगढ़
7. सुप्रिया बैद, विजयवाड़ा
8. सरोज सेठिया, कालू
9. वनिता जैन, मैसूर
10. बसन्ता बांठिया, मुम्बई

कुल प्रविष्टिया में सर्वाधिक प्रविष्टियाँ साउथ कोलकता से 151 बालोतरा से 94 व अहमदाबाद से 89 प्राप्त हुई।

भावना

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा पूज्य प्रवर की रास्ते की ''भावना'' का उपक्रम 28 नवम्बर 2018 से निरंतर गतिमान है। परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी के शुभ आशीर्वाद एवं मातृहृदया, असाधारण साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की कृपा से कर्म निर्जरा के इस महनीय उपक्रम से जुड़ने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ है। अतः आप सभी शाखा मंडलों एवं राष्ट्रीय कार्यसमिति की बहनों से विनम्र अनुरोध है कि सेवा के इस महायज्ञ से जुड़कर गुरु सन्निधि का लाभ उठायें। राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य **श्रीमती वीणा बैद एवं श्रीमती सुधा नौलखा** ने इस क्रम से जुड़कर सेवा–सन्निधि का लाभ उठाया। प्रत्येक शाखा मंडल 5–5 बहनों के समूह में आकर 7 दिन की सेवा प्रदान करें। शारीरिक रूप से पूर्णतया स्वस्थ बहनों को भेजने का प्रयास करें। नाम देने हेतु निम्न बहनों से सम्पर्क करें –

निदेशिका
श्रीमती शोभा दुगड़
+91 98313 00006

संयोजिका
श्रीमती कांता तातेड़
+91 98206 48887

श्रीमती लीना दुगड़
+91 98307 58882

सेवार्थी बहनों की सूची

नाम	क्षेत्र	नाम	क्षेत्र
गंगाबाई पितलिया	मैसूर	सरोज सिंघवी	तिरूपुर
कमला गेलड़ा	चैन्नई	पुखराज कोठारी	तिरूपुर
अलका खटेड़	चैन्नई	अलका बैद	तिरूपुर
रतनबाई लुंकड़	चैन्नई	संतोष छाजेड़	जलगाँव
सरला मूथा	चैन्नई	वीणा छाजेड़	जलगाँव
मंजु सेठिया	चैन्नई	सुनिता समदरिया	जलगाँव
संगीता कटारिया	चैन्नई	मैना छाजेड़	जलगाँव
संगीता सूर्या	धुलिया	सुनिता सेठिया	औरंगाबाद
निशा पोपली	धुलिया	सीमा मुथा	औरंगाबाद
संगीता बैदमुथा	धुलिया	अंजु चंडालिया	औरंगाबाद
आशा घुंडियाल	धुलिया	संजु सिपानी	औरंगाबाद
सरिता श्यामसुखा	तिरूपुर	मंगला लोढ़ा	औरंगाबाद
सरिता सुराना	तिरूपुर	प्रमिला सेठिया	जालना

अभातेममं को मिलने वाला अनुदान

1,00,000 ओस्तवाल ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज, भीलवाड़ा (राजस्थान) द्वारा नववर्ष केलेण्डर हेतु सप्रेम भेंट

1,00,000 श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्राविका गौरव श्रीमती सुशीला देवी बाबूलालजी कच्छारा (आमेट-मुंबई) द्वारा नववर्ष केलेण्डर हेतु सप्रेम भेंट

51,000 श्रीमती तारादेवी मीठालालजी धाकड़ (शिरोदा - मुंबई) द्वारा सुपुत्र कल्पेश संग जीनल के विवाह के उपलक्ष में भावना सेवा हेतु

51,000 पटना महिला मंडल द्वारा भावना सेवा हेतु

51,000 जोधुपर महिला मंडल द्वारा भावना सेवा हेतु

31,000 वीरगंज महिला मंडल द्वारा भावना सेवा हेतु

21,000 श्रीमती शांतिदेवी डाकलिया (सरदारशहर-दलखोला) द्वारा भावना सेवा हेतु

15,000 पूर्णिया महिला मंडल द्वारा भावना सेवा हेतु

11,000 श्रीमती पुष्पा देवी रामलाल जी, बबीता-नवीन, दीप्ति-विवान, प्रवीत गन्ना (आसीन्द-बैंगलुरु) द्वारा भावना सेवा हेतु

11,000 कूच बिहार महिला मंडल द्वारा भावना सेवा हेतु

11,000 कालीकट महिला मंडल द्वारा भावना सेवा हेतु

5,100 श्रीमती सरिता मांगीलालजी एवं संगीता सुनील जी सिंघी (डूंगरगढ़-इस्लामपुर) द्वारा भावना सेवा हेतु

5,100 पटना सिटी महिला मंडल द्वारा भावना सेवा हेतु

5,100 श्रीमती कविता राजेश जी नाहर (बीदासर-दलखोला) द्वारा भावना सेवा हेतु

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सभी अनुदानदाताओं के प्रति हार्दिक आभार !

महामंत्री कार्यालय : श्रीमती नीलम सेठिया - 28/1, शिवाया नगर, 4th Cross, रेड्डीयुर, सेलम-636004, तमिलनाडु
मो. : 099524 26060 ईमेल neelamsethia@gmail.com

कोषाध्यक्ष कार्यालय : श्रीमती सरिता डागा - 45, जेम एनक्लेव, प्रधान मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर - 302 017
मो. : 094133 39841 ईमेल sarita.daga21@gmail.com

नारीलोक हेतु सम्पर्क करें : श्रीमती सौभाग बैद मो. : 080031 31111 श्रीमती भाग्यश्री कच्छारा मो. : 096199 27369
नारीलोक देखें website : www.abtmm.org